मालूम ही नही

लीना मेहेंदळे

एक छोटासा सवाल - और उसने एक बडे अंधेरे को उजाले में ला दिया । कोई सोचेगा कि यह अंधेरा अज्ञान का था । नही, नही यह तो अकृतज्ञता का अंधेरा था । यह अंधेरा था राष्ट्रमूल्यों की अवहेलना का. यह अंधेरा था हमें क्या मनोवृत्ती का । यह अंधेरा था नही सुधरेंगे वाली जिद का । ग्लोबलाइजेशन के जमाने में राष्ट्र मूल्य खो बैठे लोगोंकी संवेदनाहीनता का।

या इसे उच्च कोटी की सत्यावादिता कहेंगे आप ? जो मालूम न था, तो कह दिया कि मालूम नही । जो फाईलों में नही देखा तो लिखकर दे दिया कि फाईलों में नही है। फिर इसे कोई गलत क्यों मान रहे है।

क्यों भाई, क्या अपने यहाँ मन की चुभन जैसी भी कोई चीज होती है? कुछ बातें ऐसी होती हैं कि उनके फाइल मे न होने की बात लिखते हुए भी चुभन के मारे हाथ से पेन छूट जाना चाहिये।

करोडपति में सवाल पूछिये कि बीडी जलाइले किसने लिखा तो लोग मस्तीमें झूमते हुए बीडी की धुन पर थिरकते हुए इसका सही जबाब देंगे। फिर उनसे पूछिये अगला सवाल - एक करोड रुपये के लिये - कि जय हिंद का नारा अपने देशको किसने दिया? सब करोडपति का स्क्रीन छोड कर भाग निकलेंगे। हैना? फिर फाइलों का क्या दोष? जो बात केंबीसी को मालूम नही हो वह फाईलों को कैसे मालूम होगी?

लेकिन कुछ पुराने जमाने के लोग हैं । उनके ज्ञान का अनुभव और उसीके साथ आई हुई अकड के कारण उनके लिये शब्द है - बूढा उल्लू - या अग्रेजी मे कहेंगे बँडीकूट। तो कुछ ऐसे ही बूढे उल्लूओंने कान खन खडे किये, पंख फडफडाए, आँखे मिचमिचाईं और आपनी बूढी खर्ज आवाज में कहा मालूम क्यों नही? वो तो थे। आयसीएस जैसी उच्चत्तम परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद भी इस देशके लिये उस नौकरी को ठुकराकर देश में लौट आये थे। वो तो थे। कलकत्ता म्युनिसिपल कार्पोरेशन में पहले मुख्य अधिकारी और १९३१ में मेयर भी रहे । इसी दौरान उन्होने इंडियन नॅशनल कॉंग्रेस की ॲक्टिव्ह सदस्यता ले ली थी और उनका राजकीय कार्य आरंभ हो चुका था।

वो तो थे। भारतीय स्वतंत्रता की लडाई के लिये १९३७ में जो कलकत्ता अधिवेशन हुआ उसकी भव्य रॅली के संयोजक थे और पंडित जवाहरलाल के कंधे से कंधा मिलाकर रॅली की अगुवाई कर रहे थे। अगले ही वर्ष १९३८ में वे इंडियन नॅशनल कॉंग्रेस के अध्यक्ष बने - उस वर्ष उन्होंने देशकी पहली प्लानिंग रिपोर्ट पेश की। साथ ही यह मुद्दा भी छेड दिया कि अब हमें पूर्ण स्वराज्य की माँग करनी चाहिये।

वो तो थे। हमारी इतिहास की पुस्तकों मे भी थे। उनके विचार और जनचेतना की मुहिमसे डरकर ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार किया था। फिर जेल में उनकी तबियत खराब होने का बहाना मिला तो उन्हें छोड भी दिया लेकिन हाऊस ॲरेस्ट में रखा। वहाँ से वे भाग निकले और पहुचे उत्तर पूर्वी छोर पर। वहाँ से पठान का भेस धारण कर पख्खनिस्तान, अफगानिस्तान के रास्ते यूरोप पहुचे। वहाँ से फिर बर्मा, और आजाद हिंद सेना की स्थापना।

उस जेल में काटे दिनों की और हाऊस ॲरेस्ट की बात तो फाईलों में होगी। मुझे नही लगता कि ब्रिटिश राज्यकाल में किसी ने उन फाइलों को डी क्लास में डाला होगा - अर्थात वो फाइलें जो केवल तात्कालिक कामकाज की हैं - जिन्हे एक वर्ष बाद नष्ट कर देने के आदेश है और १९६० व १९७० के दशक में भी किसी ने उन्हें डी क्लासिफाय करने की घृष्टना नही की होगी । बाद में वे अन्य फाइलों की गठ्ठरों के नीचे दब गई होंगी और अब भी वहीं पडी होंगी।

वो तो थे। अंदमान के रॉस आयलंड पर १९४१ में जपानी सिपाहियों के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी के नाते आये और तिरंगा फहराया। वह जगह आज भी स्मारक की तौर पर सुरक्षित है - यह बात भी फाइलों में होगी।

वो तो थे - चलो दिल्ली का नारा देकर आजाद हिंद सेना (अर्थात् हिंदुस्तान को आजादी दिलाने के लिये लडने वालों की फौज) रंगून के रास्ते नागालँड के कोहिमा तक पहुची और ब्रिटिशों को हराकर हिन्दुस्तान की सरजमीन पर कदम रखा। उस लडाई में मारे गए ब्रिटिश सैनिकों का स्मारक कोहिमा में आज भी सुरक्षित रखा जा रहा है - तो उन सरकारी फाइलों में भी कहीं वो मिल ही जायेंगे ना ।

जब ब्रिटिश सरकार ने तय किया कि आजाद हिंद सेना के सिपाहियों और अधिकारियों पर राष्ट्रद्रोह का मुकादमा चलाया जायेगा, तब आजाद हिंद सेना की वकालत का जिम्मा लिया खुद पंडित जवाहरलाल नेहरु ने। क्या 'ब्रीफ ' बनाया था पंडितजी ने? क्या थी उनकी दलील? कि ये आजाद हिंद सेना देश कों लूटने वाले चोर, डकैत, लुटेरों की टोली है? या फिर यह प्राण हथेली पर रखकर देश की स्वतंत्रता के लिये मर मिटने वालों की सेना है? क्या उस सेना का हर सिपाही और उनका सेनापती भी स्वतंत्रता की लडाई का सिपाही नही था? क्या किसीकी यह दलील है कि पंडितजी को स्वतंत्रता की लडाई जैसी कोई बात मंजूर नही थी? पूछ लीजिये करोडपती में कि लाहौर के १९३९ के इंडियन नॅशनल कांग्रेस के अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की माँग किसने रखी थी? उत्तर है - स्वयं पंडित जवाहरलाल ने। तो फिर उसी पूर्ण स्वराज्य के लिये लडनेवाली आजाद हिंद सेना का सेनापती स्वतंत्रता सैनिक कैसे नही हुआ?

जब जानकारी के अधिकार के तहत नेताजी सुभाष चंद्र बोस के स्वतंत्रता सैनिक होने की बाबत जानकारी माँगी गई तो क्यो उत्तर दिया गया कि फाइलों से उनके स्वतंत्रता सैनिक होने की जानकारी नही मालूम होती।

सरकार का ही एक संगठन है - केंद्रीय विद्यालय जो पूरे देशभर मे स्कूल चलाता है। इनके लिये पुस्तकें तैयार करने का काम भी एक सरकारी संगठन करती है- जिसका नाम है एनसीईआरटी । उनकी ८ वीं, ९वीं,१०वीं बालभारती पढ जाइये तो कहीं पर ये चार पंक्तियाँ मिलेगी-

आजानूबाहू ऊंची करके वे बोले
रक्त मुझे देना।
इसके बदले में भारत की
आजादी तुम मुझसे लेना।।

तो अब देखना है कि क्या किताबें फाइलों का रिकार्ड ठीक करेंगी या फाईलें किताबोंका?

लेकिन पहले एक अहम् सवाल। सुओ मोटो (suo-motu) नोट करने की भी एक व्यवस्था अपने शासन तंत्रमे है। क्या फाइलों को वह भी मालूम नही है।

----------X----------

पता,

१५, सुनीती
जगन्नाथ भोसले मार्ग
मुंबई - ४०० ०३२